आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 29-07-14

बेहद के बाप की मुरली का आज का महावाक्य हैं - बाप (भगवान) न दुख देते हैं, न सुख देते हैं, बल्कि सुखी होने का रास्ता बताते हैं. रावण भी न दुख देते हैं, बल्कि दुखी होने का उल्टा रास्ता बताते हैं.

क्या है सुखी होने का रास्ता?

इस बेहद के सृष्टि चक्र के दो युग, आधाकल्प, रामराज्य (ईश्वर द्वारा स्थापित) चलता हैं और बाकी दो युग या बाकी आधाकल्प रावणराज्य (माया द्वारा स्थापित) चलता हैं. हम सब आत्माये इस बेहद के सृष्टि चक्र के ड्रामा में अपने-अपने समय पर परमधाम से नीचे आकर अपना पार्ट बजाते हैं. अब जो आत्माये इस सृष्टि चक्र में पहले आधाकल्प (सतयुग-त्रेतायुग) में पार्ट बजाने आने वाली हैं, उस आत्माओं को भगवान स्वयं आकर पढ़ाते हैं या ईश्वरीय ज्ञान देते हैं. जो आत्माये पुरुषार्थ कर इस ज्ञान को अच्छी तरह समझकर, खुद में धारण करती हैं और दूसरों को भी यह ज्ञान देकर आप समान बनाती हैं, वह आत्माये, ईश्वरीय राज्य (सतयुग-त्रेता) में ऊंच पद प्राप्त करती हैं. भगवान (टीचर) हम सब आत्माओं को पढ़ाई एक-समान पढ़ाते हैं, लेकिन फिर स्टुडेन्ट आत्माये नम्बरवार अपने-अपने पुरुषार्थ अनुसार इसे पढ़ते हैं या कहे ज्ञान को समझते हैं और स्वयं में धारण करते हैं और दूसरों को भी करवाते हैं. इसके आधार पर सतयुग-त्रेता में नम्बरवार पद प्राप्त करते हैं.

बाबा ने आज बार-बार यही कहा की अभी संगमयुग पर किया हुआ पुरुषार्थ ही हम आत्माओं का ऊंच प्रालब्ध बनायेगा. अभी जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना सुख, पद के आधार पर, वह आत्माये सतयुग-त्रेता में पायेंगे.

ये हम सब जानते हैं की इस ईश्वरीय पढाई में तीन मुख्य बातें हैं - आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान.

आत्मा का ज्ञान -- इसमें मुख्य हैं, हमारी देही अवस्था बनानी और इसमें सबसे ऊंच स्थिति हैं, स्वयं को आत्मा समझकर दूसरे के साथ कार्य-व्यवहार में आते आत्मा-आत्मा, भाई-भाई की संपूर्ण स्वच्छ वृति हो.

परमात्मा का ज्ञान -- इसमें मुख्य हैं, बाप जैसा हैं उसको सही रुप से समझकर दूसरों को भी बाप की सही पहेचान करवाना. स्वयं को आत्मा समझकर परमात्मा बाप के साथ योग कर स्वयं को संपूर्ण पावन बनाना.

सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान -- यह हैं स्टोरी. जो खुद सुनकर, समझकर औरो को भी समझाना और इस ईश्वरीय पढ़ाई में आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ का उमंग-उत्साह दिलाना.

ॐ शांति. Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .